वैज्ञानिक सोच-समझ पुस्तकमाला

सूरज का रास्ता

डा. जयपाल तरंग

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली

सूरज का रास्ता

सूरज का रास्ता

डॉ. जयपाल तरंग

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली ११०००२

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
१७ बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली ११०००२
फोन : ३३१९२८२, ३७२२२०६

वैज्ञानिक सोच समझ पुस्तकमाला

मूल्य १८ रुपये
१९९६

मुद्रक :
प्रभात पब्लिसिटी,
नई दिल्ली ११०००२

दो शब्द

भारत के पिछड़ेपन के कारणों में अंधविश्वास और अफवाहों का काफी बड़ा हिस्सा है। देश में विज्ञान और तकनीकी की उल्लेखनीय उन्नति के बावजूद अभी भी अंधविश्वासों का काफी बोलबाला है विशेषकर हमारे ग्रामीण इलाकों में। अफवाहें काफी तेज़ी से फैलती हैं और देश की प्रगति में बाधा बन जाती हैं।

जबकि हम २१वीं सदी की ओर अग्रसर हो रहे हैं तब ऐसी प्रवृतियां देश को पीछे की ओर धकेल रही हैं जिसे रोकना सभी का काम होना चाहिए, विशेषकर प्रौढ़ शिक्षकों का। बीमारी होने पर अभी भी लोग डाक्टर और वैद्य को न दिखाकर झाड़-फूंक आदि करवाते हैं जिसके कारण बीमार व्यक्ति की मृत्यु तक हो जाती है। विज्ञान में इतनी उन्नति के बावजूद लोगों का अंधविश्वासों पर चलना शर्म की बात है। इसका मुख्य कारण है निरक्षरता, जागरूकता और विज्ञान की सोच और समझ की कमी।

इस कमी को दूर करने के लिए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ प्रयत्नशील है। इस दिशा में ''वैज्ञानिक सोच और समझ बढ़ाने'' पर एक लेखक कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस लेखक कार्यशाला में वैज्ञानिक सोच और समझ को विकसित करने वाली कुछ पुस्तकों की रचना की गई। इन पुस्तकों में से कुछ पुस्तकें ''वैज्ञानिक सोच-समझ पुस्तकमाला'' के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें नवसाक्षरों एवं आम लोगों को विज्ञान से सम्बन्धित जानकारी सरल, सुबोध

भाषा में देंगी। विज्ञान भी सभी के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि 'सबके लिए स्वास्थ्य' और 'सबके लिए शिक्षा'। आशा है यह पुस्तकें नवसाक्षर साहित्य में एक सार्थक वृद्धि करेंगी।

हम शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आभारी हैं जिन्होंने लेखक कार्यशाला और इन पुस्तकों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।

कैलाश चौधरी
महासचिव
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

नई दिल्ली
दिसम्बर, १९९६

१ सूरज की सूझ

सूरज मुकन्दी विधवा का इकलौता बेटा था। गाँव भर में उसकी शरारतों के किस्से मशहूर थे। उसकी शिकायतों से ताई मुकन्दी परेशान थी। ताई मुकन्दी थी जगत ताई। गाँव के सभी लोग उसे ताई कहते थे। देवर-जेठ ताई कहें तो वे मुस्करा देतीं, लेकिन जब दादा-बाबा के मुँह से ताई सुनती तो खिलखिला पड़ती थीं।

ताई मुकन्दी मुफ्त में जगत ताई नहीं हुई थीं। वह गाँव में सब के काम आती थीं। अमीर हो या गरीब मुकन्दी सबके दुख-दर्द में शामिल होती। मुँहफट इतनी कि अन्याय के खिलाफ उठ खड़ी होती। पंच-पंचायत में कहीं गड़बडी हुई, इंसाफ का गला घुटता देखा तो शेरनी सी आ दहाड़ती। मजाल किसी की जो गाँव में बेइंसाफी हो जाए। सब उसका बहुत आदर करते थे। सूरत की शरारतों की भी अनदेखी करते थे। सूरज की शरारतें सहन नहीं होती थीं। कोई न काई उसकी शिकायत लेकर ताई के घर आता। ताई उसकी भी खूब खबर लेती। वह भी सूरज की बातें सुनकर कायल हो जाती।

एक दिन धायो बहिन मुकन्दी के घर आई बोली-"ताई, तुम्हारे सूरज ने ऐसा किया जैसा कोई दुश्मन के साथ भी न करे। बस इतना कहा और रोने लगी। ताई मुकन्दी ने अपनी ओढ़नी से उसके आँसू पोंछे उसको ढ़ाढ़स बँधाया और पूछा-"क्या, धायो बहिन। बता, क्या किया सूरज के बच्चे ने?"

धायो ने बताना शुरू किया। कल रात से मंगलू को तेज बुखार है। कल दिन में उसके तलवे में कुछ चुभ गया। ढेर सारा खून भी निकला। मैं स्वास्थ्य केन्द्र पर पट्टी बँधवा लाई। आज रात तेज बुखार में वह जाने क्या-क्या कह रहा था? मैं डर गई मैं तुलाराम भगत के

घर गई। वह आया। उसका बड़बड़ाना सुना और बोला- इसे ऊपरी हवा का चक्कर है। कोई ऊपरी ब्याधा है। उसने पानी के कुछ छींटे मारे। मंत्र पढ़े और बड़बड़ाना बंद हो गया।

भगत मुझसे बोला- कल तड़के- एक थाली में सिंदूर की डिबिया दो अगरबत्ती, एक घी का दीया, कुछ चावल और मिठाई रख लेना। इन्हें लेकर कंठी माता के मठ पर जाना। मैं वहाँ मिल जाऊँगा। दस-बीस रूपये चढ़ावे के लिए रख लाना। भगत चला गया। थोड़ी देर बाद मंगलू बुखार में फिर बड़बड़ाने लगा। जैसे-तैसे दिन निकला।

सवेरे-सवेरे मंगलू से मिलने सूरज आ गया। उसने मंगलू का हाथ पकड़कर देखा उसका माथा छुआ। बोला- चाची इसे तो बहुत तेज़ बुखार है। सूरज ने एक पतीली में ठंडा पानी लिया। मंगलू की टोपी धोकर ठंडे पानी में डुबाता और थोड़ी देर मंगलू के माथे पर रखता। वह बहूत देर तक ऐसे ही करता रहा। मंगलू आराम से सो गया।

मैंने भगत जी का कहा थाल सजाया। जब मैं उसे लेकर कंठी माता के मठ के लिए चली तो सूरज ने रास्ता रोक लिया। बोला कहाँ जा रही हो चाची। मैंने सब बता दिया। भगत ने कहा था-"कंठी माँ के मठ पर थाल सजाकर आना। वहीं जा रही हूँ वह मंगत को ठीक कर देगी।" वह बोला "कंठी माँ की पूजा ठीक है। लेकिन बीमार को ठीक करेगा- डाक्टर।" अंधी मत बनो। और भी जाने क्या कहा?

ताई का चेहरा क्रोध में लाल हो गया। वह बोली- कहाँ है वह यमदूत "आज वह नहीं या मैं नहीं। उसकी शिकायतों ने मेरी नाक में दम कर रखा है।" धायो ने फौरन बता दिया। वह

मंगलू के पास ही बैठा था मुझे रसाई वाले कमरे में बंद कर दिया। मैं तो खिड़की से कूदकर तुम्हारे पास आई हूँ। खिड़की बंद थी, उसे खोलने में मुझे घंटा भर लग गया। हो सकता है वह अब भी वहीं हो।

ताई मुकन्दी ने अपनी छड़ी उठाई। वह धायो के साथ उसके घर के लिए चल पड़ी। रास्ते भर सूरज को कोसती गई। उसकी हड्डी पसली एक करने के इरादे को दुहराती चली। रास्ते में प्रधान जी मिले। वे भी मंगलू को देखने जा रहे थे। ये तीनों धायो के घर पहुंचे तो वहां गाँव के बहुत से लोग लुगाई जमा थे। डाक्टर मंगलू को इंजेक्शन लगाकर चैन से बैठ गया। प्रधान जी भी डाक्टर के पास मूढ़े पर जा बैठे। प्रधान जी ने डाक्टर से पूछा- क्या हुआ डाक्टर साहब- मंगलू ठीक तो है?

डाक्टर ने कहा- मंगलू बिल्कुल ठीक है। वह मौत के मुंह से बचा है। बचाने वाला है सूरज। सूरज सही समय पर सही कदम न उठाता तो मंगलू भगवान को प्यारा हो जाता। हफ्ते में एक दिन मंगलवार को मैं आपके स्वास्थ्य केन्द्र पर आता हूँ। आज भी आया। सूरज ने मुझे बताया

कि मंगलू को सख्त बुखार है। सूरज ने मुझे एक कीड़े मार दवा की शीशी दिखाई। इस टूटी शीशी पर मंगलू का पैर पड़ गया था। शीशी का टुकड़ा उसके पैर में घुस कर निकल गया। उस जहरीली शीशी के टुकड़े ने घाव ही नहीं बनाया, उसके शरीर में जहर का उसर शुरू हो गया। इसी कारण उसे बुखार हो गया। मैं उचित दवा-इंजेक्शन लेकर यहां आया। मंगलू को बेहोश पाया। मैंने दो इंजेक्शन दिए। मंगलू होश में आ गया। उस जहर की काट हमारी दवा ने कर दी मंगलू इस बेहोशी की हालत में दो घंटे और पड़ा रहता तो उसका काम तमाम हो जाता।

धायो ने मंगलू बेटे को देखा। वह मुस्करा रहा था। धायो बहुत खुश हुई। वह सूरज के पैरों में जा गिरी। सूरज ने चाची धायो के हाथ जोड़े। उसे खड़ा किया। वह बोले जा रही थी। सूरज मेरे लिए भगवान बनकर आया। उसने मेरे बेटे को बचाया। सूरज को छोड़कर धायो मुकंदी ताई से जा लिपटी। सूरज को भगवान बताने लगी। तभी सूरज की आवाज सुनाई पड़ी और भगत क्या है। प्रधान जी बोले-किसी को भगवान या यमदूत बताने की ज़रूरत नहीं है। हमें वैज्ञानिक

तौर-तरीकों पर ध्यान देना चाहिए।

मुकंदी बड़बड़ाई ये वैज्ञानिक तौर तरीके क्या हुए? ताई ने भी जानना चाहा। प्रधान जी बोले -ताई, डाक्टर साहब बताएंगे। सब आदमी अपनी-अपनी जगह पर शांति से बैठ जाएं। डाक्टर साहब की बात को ध्यान से सुनें।

डाक्टर साहब खड़े हुए। और बोले- भाइयों और बहनों, वैज्ञानिक तरीका है अंधे बनकर मत चलो। हर बात की जांच-पड़ताल करो तब उसका यकीन करो। कोई बात समझ में न आए तो किसी समझदार आदमी से मालूम करो। हमारे घरों में कीड़े मार दवाएं रहती हैं। इससे फसलों में छिड़कते समय कई बातों का ध्यान रखते हैं। लेकिन दो बातों को भूल जाते हैं। एक इन दवाओं को अलग रखें। ऐसी जगह रखें जहां बच्चों के हाथ न पड़ें। बोलो-क्यों? ताई मुकन्दी बोली, "बच्चे खेल-खेल में पी सकते हैं। ज़हर पीने का मतलब है अपनी मौत बुलाना।" डाक्टर ने ताई के जबाव की तारीफ की। आपने बिलकुल ठीक कहा, सब गांठ बांध ले कि कीड़े मार दवा को बच्चों से बचा कर अलग जगह रखें।

प्रधान जी हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। वे बोले-दूसरी बात क्या है डाक्टर साहब?

डाक्टर ने बताया- दूसरी बात है कि जब कीड़ेमार दवा की शीशी खाली हो जाए तो उसे गाँव और खेत से दूर किसी गड्ढे में दाब दें।

ताई मुकंदी बोली- किसी पानी के गडढ़े या पोखर में नहीं। वरना जानवर वहां पानी पीएंगे। ये पानी ज़हर होगा।

इस बार सब बोल पड़े- ठीक है ताई। डाक्टर ने चेतावनी दी कि आप लोग इन शीशियों को कूड़े में फैंक देते हैं। वे खाद के गडढ़े में पहुंच जाती हैं। वहां ये गलते नहीं हैं। खेत में पहुंच कर किसी के पैर में गड़ सकते हैं जहर का डंक हैं ये। इन्हें कूड़ेदान से अलग रखो।

प्रधान जी ने अपनी जेब से पांच रूपये का नोट निकाला। उन्होंने सूरज को अपने पास बुलाया। उसे वह नोट दे दिया। उसने खुशी-खुशी नोट लिया और प्रधान जी के चरण छुए। इसके बाद अपनी माँ के चरणों में प्रणाम किया। और

वह नोट उन्हें दे दिया। सूरज ने अपनी माँ के कान में कुछ कहा। माँ ने सूरज के गाल पर प्यार की चपत जमाई। उसने पांच का नोट धायो को दिया। धायो ने लेने से इंकार कर दिया। ताई मुकन्दी ने जिद की और कहा- मंगलू को इससे दूध पिलाना। धायो बोली- ताई, सूरज को इससे दूध पिला देना। ताई ने वह नोट मंगलू को दे दिया। उसने नोट फौरन लपक लिया।

प्रधान जी ने कहा सुनो भाइयों और बहनों! डाक्टर की दोनों बातों का ध्यान रखना। तभी सूरज बोला तीसरी बात और है? वह क्या? प्रधान जी ने पूछा।

२ सूरज का नील कंठ

दशहरे के दिन इस गांव का हुलिया बदल जाता है। रौनक अली यहां के पुराने जमीदार हैं। इस दिन दोपहर को गांव के लोगों की दावत करते हैं। पहले रामचरित मानस का संगीतमय पाठ होता है। बाद में सूफिया कव्वाली होती है। गांव की चौपाल भी, हंसी-फुलझड़ियों का अखाड़ा बन जाती है।

हरिया चौधरी गांव का मजाकिया आदमी था। सूरज उनको जोकर चाचा कहता था। वह लोगों की ज़िन्दगी के चुटकले सुनाता। हंसते-हंसते लोगों के पेट में बल पड़ जाते। सूरज और हरिया चौधरी में कानाफूंसी हुई। दोपहर पहले ही वे गांव लौट आए। सूरज चौपाल पर बैठ गया। हरिया चौधरी चौपाल के सामने गली में खड़ा रहा।

सूरज अपनी शरारत के नाटक के इंतजार में चौपाल चर्चा में हिस्सा लेने लगा -

चौपाल पर कई लोग बैठे थे। पंडित प्रभुदयाल

से नोक-झौंक चल रही थी। प्रधान जी पंडित जी की बातों का मजाक उड़ा रहे थे। प्रधान जी बोले- "पंडित जी, हम नहीं मानते कि दशहरे के दिन नीलकंठ देखना शुभ होता है।"

सूरज भी बीच में बोल पड़ा-यह गलत है। सब पक्षी बराबर होते हैं। उनके दर्शन हर रोज शुभ हैं।" पंडित जी सूरज पर बरस पड़े। "बड़ा ज्योतिषी बनता है। कोई धर्म ग्रंथ पढ़ा है? बस शरारतें करता रहता है। पुरानी बातें पत्थर की लकीर समझो।"

सूरज आदर से बोला- पंडित जी, हर पुरानी

बात सही नहीं होती। जैसे हर नई बात भी सही नहीं होती।

पंडित जी ने कहा- तेरे लिए तो सब बातें गलत हैं। जो तू कहे वही सही।

नहीं पंडित जी, सूरज बोला- हर बात की जांच करो। समझो, विचारो तब उसे सच मानो। यह है वैज्ञानिक तरीका। पंडित जी चुप लगा गए।

प्रधान जी ने भी सूरज की बात को सहारा दिया। तभी एक किसान बोल पड़ा-

कागा का से लेत है,
कोयल का को देत।
एक बोली के कारने,
जग अपना कर लेत।

प्रधान जी ने उसे डाँट दिया। भई नीलकंठ की बात हो रही है बीच में कोयल और कौवा कहां से आ गए।

पंडित जी ने चुप्पी तोड़ी। किशन ठीक कह रहा है। कोयल और कौवा दोनों काले हैं। अब

बता सूरज। दोनों बराबर हैं?

सूरज बोला- बिल्कुल दोनों बराबर हैं।

पंडित जी ने कहा - कोयल के क्या कहने। कितना मीठा गीत गाती है। कहां-कोयल और कहां कौवा। कौव-कौव करता रहाता है।

सूरज भी वैसे ही बोला- कौवे के क्या कहने। कितना आदर पाता है। श्रद्धा-पक्ष में यानी कनागतों में देवताओं की तरह पूजा जाता है। कहां कौवा और कहां कोयल। लोग हँस पड़े।

प्रधान जी ने कहा - कहो पंडित जी, कौवा तो आपके बराबर हो गया। मैं कहता हूँ "नीलकंठ की बात करो। दशहरे पर उसके दर्शन से क्या फायदा होता है?"

पंडित जी ने झुँझलाकर कहा - होता है-लाभ होता है।

तभी कंछिदा कहार बोल पड़ा - पंडित जी ठीक कह रहे हैं। चमेली के बाग में नीलकंठ का जोड़ा रहता है। रोज सबको दिखाई देता है।

आज मैं सुबह से दोपहर तक वहाँ रहा। मुझे दिखाई नहीं दिया।

सूरज ने पंडित जी से पूछ लिया - पंडित जी आप को तो दशहरे पर नीलकंठ के दर्शन हुए होंगे।

पंडित जी बोल पड़े - कई बार दर्शन हुए हैं।

लच्छू किसान बोला- नीलकंठ के दर्शन से पंडित जी को बड़ा लाभ मिला। खूंटे पर एक दुधारू गाय रहती थी, वह चल बसी। खुशहाली की जगह घर में कंगाली ने डेरा डाल लिया। क्यों पंडित जी? लोग हंस पड़े।

"वह सब ईश्वर की मरजी है।" पंडित जी ने कहा।

सूरज बोला - यही मैं कह रहा हूँ। सब ईश्वर की मरजी है। तो नीलकंठ की चिन्ता क्यों?

उसी समय हरिया चौधरी चौपाल पर चढ़ा और बोला - किसे है नीलकंठ की चिन्ता?

प्रधान जी ने कहा- पंडित प्रभुदयाल को।

हरिया बोला - पंडित जी, दशहरे पर नीलकंठ के दर्शन का लाभ क्या है? पंडित जी ने कहा- नीलकंठ देखने वाले का घर धन-दौलत से भर जाता है। उसे सुख - शांति मिलती है। मरने के बाद स्वर्ग मिलता है।

हरिया का दूसरा सवाल था-पंडित जी, नीकंठ जिन्दा हो या मुर्दा?

पंडित जी शेर की तरह दहाड़े- ज़िन्दा नीलकंठ देखे तो खुशहाली और स्वर्ग मिलता है। मुर्दा नीलकंठ देखे तो घर में गरीबी और भुखमरी रहती है। मरने के बाद नरक मिलता है। हरिया ने अपनी चादर अलग फेंक दी। तो देखो, मुरदा नीलकंठ। मैं किसी को स्वर्ग नहीं जाने दूंगा। किसी के घर में चूल्हा नहीं जलेगा। सब भूखे मरोगे दशहरे के दिन मुर्दा जो नीलकंठ देखा है। सूरज बोला - अरे पंडित जी ने तो आंखें बंद कर रखी हैं।

हरिया बहुत जोर से हँसा। फिर बोला-पंडित जी आ गए बहकावे में। अरे दशहरे के दिन कोई मुरदा नीलकंठ लाएगा भला और चौपाल पर दिखाएगा।

आंख मटकाकर लोगों से पूछा - सच कहता हूँ ना?

कई लोगों ने हां भर दी।

पंडित जी को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने आंखें नहीं खोलीं।

इस बार सूरज ने हरिया से पूछा- जोकर चाचा, आपकी अंगुली से खून कैसे बह रहा है?

हरिया बोला-ससुर नीलकंठ बड़ा पाजी है। चौंच का वह वार किया कि घाव कर दिया।

देखो पंडित नीली-नीली आंखों से कैसा देख रहा है? चल पंडित जी को पालागन कर। पंडित जी तुझे मुरदा समझकर अंधे हो गए हैं।

पंडित जी ने आंखें खोल दीं। बोले हरिया बड़ा मजाक करता है। जब मुरदा नीलकंठ देखा तो माथा पीट लिया। और बोले- अब सारा गाँव भूखा मरेगा। फसल में आग लगेगी। किसी को रोटी नसीब न होगी।

• हरिया बोला पंडित जी, रौनक अली चाचा का बुलावा आया है। रोटी की जगह सब को दावत नसीब होगी सब लोग जोर से हंस पड़े। पंडित जी थोड़ी देर खामोश रहे। फिर बोले- हरिया के नीलकंठ ने हमारे अंधविश्वास को तोड़ दिया। सचमुच आंखें खोल दी।

हरिया बोला - आंखें खोलीं सूरज के नीलकंठ ने। वह कैसे? प्रधान जी ने पूछा।

हरिया ने लोगों को बताया। मैं कल खेतों में घूम रहा था। अचानक ईख के खेत से भारी-भारी आवाज़ आई। "हरिया किस चक्कर में घूम रहे हो?" कौन? मैंने पूछा।

"मैं हूँ दशहरे का नीलकंठ? आवाज़ आई" कहाँ हो? दर्शन दो। मैंने कहा।

मुझे कल एक बाज ने मार दिया। मैं चमेली के बाग की पूरबी मेंड पर हूँ। जल्दी आ और मुझे देख। वही मोटी आवाज जल्दी-जल्दी बोली।

मैं चमेली के बाग में गया उसी मेंड पर पहुंचा। जैसे ही मुरदा नीलकंठ को हाथ लगाया पीछे से सूरज ने चीख मारी "हौवा"

मैं डर गया। नीलकंठ के बराबर में ही मैं गिर गया।

सूरज को देखा तो हंसी छूट पड़ी। मैं समझ गया कि अभी सूरज ही बोल रहा था। चौपाल पर नीलकंठ का नाटक मैंने किया।

लेकिन सूरज का नीलकंठ है। सूरज का नाटक है। हरिया तो इसमें जोकर है।

पंडित जी भी खिल-खिला दिए। सूरज के सिर पर हाथ रखा। आशीष दिया और कहा- सूरज के नीलकंठ ने सचमुच आंखें खोल दी। दर्शन की बात झूठ है।

प्रधान जी ने भी सूरज को शाबासी दी। और कहा - अब चलो रौनक अली साहेब के यहाँ।

सब उठ खड़े हुए। सब सूरज के नीलकंठ की चर्चा करते हंसते चले।

थोड़ी देर बाद सब रौनक अली के आहाते

में पहुँचे। रौनक अली ने सबका स्वागत किया। पंडित दीनदयान ने रामचरित मानस का पाठ किया। सूरज ने गाकर उनका साथ दिया। हमीद ने ढ़ोलक बजाई। अमीरा ने हारमोनियम। इस पाठ के बाद शंकर-शंभु कव्वालों ने कव्वाली पेश की।

"छाप तिलक सब छीनी, मो से नैना मिला के

बलि-बलि जाऊँ मैं तेरे रंगरेजुवा
अपनी-सी रंग लीनी-मो से नैना मिला के।
प्रेमबटी का मदिरा पिला के-
अपनी-सी कर ली नी रे मो से नैना मिला के।
खुसरो मिजाम के बलि-बलि जइयों-
मोहे सुहागिन कीनी रे, मो से नैना मिला के।"

लोग झूम गए। कव्वाली बंद हुई तो रौनक अली ने हाथ जोड़ कर कहा- प्रधान जी वगैरा सभी मेहमान बरामदे में चलें। मुझे खिदमत का मौक दें। सब लोग दावत में जम गए। खीर, पूरी और आलू-टमाटर की सब्जी में खूब आनंद आया, लेकिन सूरज का नीलकंठ अब भी लोगों के दिल-दिमाग पर छाया हुआ था।

३ सूरज का रास्ता

उस दिन ताई मुकंदी बहुत खुश थी। जब ताई खुश होती है तो सूरज को असली घी का हलुवा खिलाती है। गाय का ताजा दूध पिलाती है। आज सूरज के मजे आ गए। उसने हलुवा खाया। दो बड़े-बड़े गिलास गाय का दूध पीया। छोटी-छोटी मूंछों पर पहलवानों की तरह हाथ फेरा और ब्लॉक के लिए चल दिया। आज ब्लाक से खाद के दस बोरों का परमिट लेना था। ब्लॉक-दफतर गांव से पांच किलोमीटर दूर था। आने-जाने में दो-तीन घंटे लगते थे।

दोपहर ढल गई। सूरज घर नहीं लौटा। ताई मुकंदी इंतजार कर रही थी। देर हुई तो ताई खाट पर लेट गई। छप्पर के नीचे अपने घौंसले में गौरैया गाना गा रही थी। ताई खाट पर लेटी-लेटी प्यार से सुन रही थी। तभी गौरैया का छोटा बच्चा नीचे गिर गया। वह भी ताई की छाती पर। ताई डर गई। गौरैया का गीत बंद हो गया। ताई संभली। प्यार से बच्चे को हाथ में लिया। सीढ़ी की मदद से बच्चे को घौंसले में रख दिया। गौरैया घौंसले से पहले ही उड़ गई।

थोड़ी देर बाद गौरैया वापिस आ गई। बच्चे को चोंच से प्यार किया। कुछ गुर्राई भी। जैसे कहा हो - खबरदार घर से बाहर गया तो? गौरैया ने ताई की ओर देखा और गीत शुरू कर दिया। ताई मुकंदी को अपने बेटे का ध्यान आया। इतनी देर क्यों कर दी। वह भूखा होगा?

किसी ने ताई मुकंदी का दरवाजा खटखटाया। ताई ने दरवाजा खोला। और चंपा मिसरानी को देखकर बोली - बड़ी परेशान लग रही हो। ठीक-ठाक हो न मिसरानी।

"चम्पा चीख पड़ी- ठीक-ठाक थी लेकिन तेरे बेटे ने बर्बाद कर दिया।"

"हुआ क्या? ताई मुकन्दी ने पूछा"

यह पूछ क्या नहीं हुआ? मेरा ईख का खेत उजाड़ दिया। यह समझो खेत में आग लगा दी।

ताई ने कहा -गुस्सा थूक, सच-सच बता। सूरज तो ब्लॉक गया है। कोई और रहा होगा। वह विनाश के रास्ते पर कभी नहीं चलता।

आँखों देखी बात झूठ होती है क्या? चंपा ने बताना शुरू किया। सूरज ने आज इमली वाले ईख के खेत से बीस गन्ने उखाड़े। मुकन्दी ने सुना तो बोली-गन्ना चूसना था तो एक-दो बहुत होता, इतने गन्ने तो वह हफ्ते भर में भी नहीं चूस पाता। चंपा बीच में ही बोल पड़ी -ताई, गन्ने चूसता तो मैं उसकी शिकायत लेकर तेरे पास न आती।

फिर क्या किया उसने इतने गन्नों का? ताई मुकन्दी ने पूछा।

चंपा ने बताया उसने बीसों गन्ने उठाए और गड्ढ़ा खोदकर दबा दिए मैं गाँव से निकली तो मैंने देखा कोई हमारे खेत से गन्ने ले जा रहा है। मैं दौड़ी-दौड़ी वहाँ पहुंची तो देखा सूरज गडढ़ा खोदकर दबा रहा है। तुझे देखकर वह भाग गया होगा। मुकन्दी ने पूछा। ताई वह भागा कहाँ चोरी और सीना जोरी। मैंने दबे हुए गन्ने निकालने की कोशिश की तो मेरा हाथ झटक दिया। बोला खबरदार इन गन्नों को हाथ लगाया तो? मैंने कहा हमारे गन्ने और हाथ न लगाएं?

जी चाची। कहकर सूरज उस गडढ़े के ऊपर

बैठ गया और मैं समझ गई कि वह झगड़ा-टंटा करेगा। मैं उसके मुंह नहीं लगी। सीधे तुम्हारे पास शिकायत लेकर आई हूँ। तुम्हीं बताओ, उसने कर दिया न हमारा खेत बर्बाद। आज बीस गन्ने उखाड़कर दबा दिए। कल चालीस दबा देगा और परसों पूरे सौ। हमारा खेत तो गडढ़े के हवाले हो जाएगा। हम घर में भूखे रहेंगे या भीख माँगेंगे। आज मेरा धरमू होता तो वहीं खून-खराबा हो जाता।

ताई मुकंदी उठी। ठंडे पानी का गिलास लाकर दे दिया। गुड की डली भी उसे थमा दी बोली-पहले पानी पी। गुस्सा ठंडा कर। आने दे आज उसे। अब इस घर में या तो ताई मुकन्दी

रहेगी। या सूरज। उसकी शरारतें अमरबेल की तरह बढ़ती जा रही हैं। सूरज को घर से न निकाल दिया तो मेरा नाम ताई मुकन्दी नहीं।

उसी समय वहां चंपा का बेटा धरमू आ गया। बोला -सूरज को क्यों निकालती हो घर से, मुझे गांव से निकाल दो। अगर इस गांव में कोई रहने लायक है तो वह है सूरज। मैं वह हूँ जिसे घर या गांव में रहने का हक नहीं है। चंपा बोली तू क्या बक रहा है। तुझे पता ही नहीं है। सूरज ने आज क्या गजब ढ़ाया है।

मुझे सब पता है माँ। धरमू बोला।

मैं पहले घर ही गया था तूझे बता दूँ। उसने हम पर कितना बड़ा उपकार किया है।

उपकार। कोई अच्छी बात की है क्या? ताई मुकंदी ने पूछा।

धरमू बोला- बहुत बड़ा काम, बहुत भलाई का काम किया। जानती हो माँ, वे बीस गन्ने बीमार थे। धीरे-धीरे सूख रहे थे। सूरज ने उन पर बीमारी के कीड़े भी देख लिए। उसने फ़ौरन उन गन्नों को काटकर गडढ़े में दबा दिया फिर मुझे गाँव से बुलाया। एक गन्ना लिया और ब्लॉक में कृषि अधिकारी को दिखाने ले गया। मैं भी साथ था कृषि अधिकारी ने कहा तुमने अच्छा किया

जो बीमार गन्ने नष्ट कर दिए। फिर एक दवा दी कि इसका घोल बाकी गन्नों पर छिड़क देना। पास के खेतों में भी छिड़कने को कहा है।

अब बता माँ, सूरज ने ठीक किया या गलत। पहले तो चंपा के मुँह से बोल नहीं फूटे, फिर कुछ शरमाकर बोली- सूरज ने धरम का काम किया। इतने में सूरज वहीं आ गया। चाची आप ने मुझे घर से निकलवाने का काम कर दिया?

ऐसा मत कह बेटा- मैं अपनी गलती मानती हूँ। चंपा ने बड़े प्यार से कहा।

धरमू बोला- माँ तेरी गलती कोई बड़ी

गलती नहीं हैं बड़ी गलती तो मुझ से हुई।

वह कैसे- ताई मुकन्दी ने पूछा।

धरमू बोला, मैं और सूरज साथ-साथ केन्द्र पर पढ़ने जाते थे। किताब में हम दानों ने पढ़ा था। फसल में कोई पौधा सूख रखा हो। किसी पौधे पर कीड़े दौड़ते दिखाई दें तो सबसे पहले उन पौधों को काट कर गडढ़े में दबा दो या जला दो। इन पौधों पर मेरी भी नज़र गई लेकिन पढ़ी हुई बात मुझे याद ही न आई। सूरज सही कहता है पढ़ो, सुनो और करो। सूरज को देख, उसे पूरी बात याद रही। बीमारी का कारण समझा गया। जो करना था वह भी कर दिखाया। अब समझ में आया पढ़ने का फायदा। कागज

पढ़ लेना बेकार है अगर उस पर अमल न करें। सूरज ने मेरी आंख खोल दी। उसने पढ़ा, सुना और किया।

दवा की शीशी में एक कागज था। वैसे ही पढ़-पढ़ के घोल तैयार करवाया और घोल छिड़कवा दिया। साथ ही ताऊ यादराम और चाचा रूपराम को बता दिया कि वे भी अपने खेतों में इस दवा का छिड़काव कर दें। माँ यह विज्ञान का ज़माना है। तो दवा छिड़कना ही विज्ञान है क्या? चंपा ने फिर पूछा दवा छिड़कना नहीं, विज्ञान सिखाता है कि सुनी-सुनाई बात पर यकीन न करो। खुद देखो, जाँचो-परखो और निदान ढूँढो। अंधविश्वासों से विज्ञान की पट्टी इसीलिए नहीं बैठती कि विज्ञान का तरीका तर्क और जांच परख का है। यही सही रास्ता है। सूरज का रास्ता है।

ठीक है बेटा, चंपा ने कहा, अब तुम लोगों का ज़माना ही अच्छा है। लगता है हमें ही बदलना पड़ेगा। हाँ माँ, पुराने विचारों को बदलना पड़ेगा। सूरज का रास्ता ही ठीक है।

४ सूरज की सीख

मुकन्दी ताई आज बहुत खुश थी। सूरज की कोई शिकायत नहीं आई। पड़ोसिन धायो घर आई। ताई का माथा ठनका। ताई ने धायो को आदर से बिठाया और बोली -बहिन धायो उदास क्यों हो? सूरज ने कुछ शरारत की क्या?

धायो को हँसी आ गई। उसने ताई को ताना दिया। ताई तुम सूरज पर बेकार दोष मँढ़ती हो। वह तो बहुत अच्छा लड़का है।

ताई बोली- यह मैं जानती हूँ लेकिन लोग उसे समझते ही नहीं। खैर, छोड़ यह बता- कैसे आना हुआ। धायो बोली- मेहमान आया है। कहता है उसकी माँ और बापू बीमार हैं। बेटी बाला को आज ले जाना चाहता है। आज बुद्ध है। बुद्ध को बहिन भाई के घर से विदा नहीं होती। यह अशुभ माना जाता है। पर वह जिद कर रहा है। मैं पंडित प्रभुदयाल जी के घर गई। वह घर पर नहीं नहीं थे। चौपाल पर गई। पता चला कि वह दो दिन से चौपाल पर भी नहीं आए।

तभी प्रभुदयाल जी ताई के घर आ गए। ताई ने खाट बिछाकर पंडित जी का स्वागत किया। पंडित जी आराम से बैठ गए। सूरज की शिकायत करने आए थे। सूरज पहले ही घर पहुंच गया। सूरज ने पंडित जी के चरण छू कर नमस्ते की और बैठ गया।

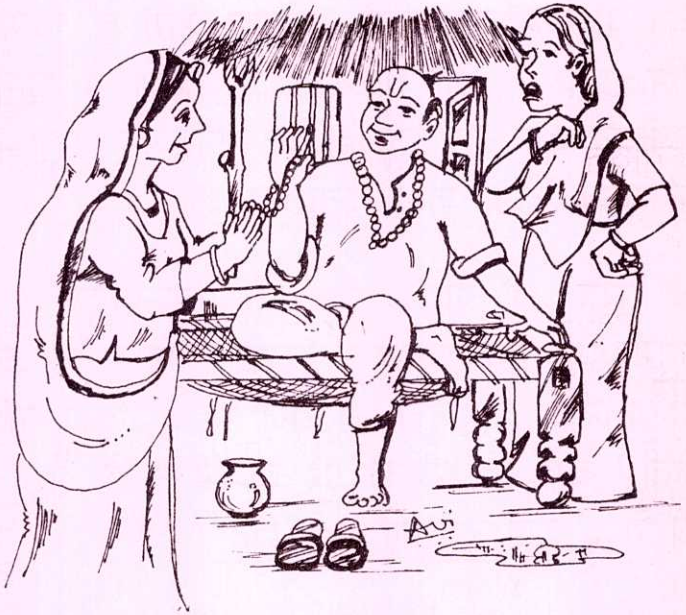

धायो बोली-अच्छा हुआ पंडित जी मिल गए। मैं आपके घर गई थी।

क्या बात है? पंडित जी ने पूछा।

ताई ने कहा- इसका दामाद आया है। आज

बुद्ध है। वह बाला बेटी को ले जाने की जिद कर रहा है।

पंडित जी बोले-ताई किस दिन किस दिशा में जाना चाहिए और किस दिन किस दिशा में नहीं जाना चाहिए। यह सब हमारे ग्रंथों में लिखा है। किसी दिन पूरब को जाना अशुभ है। किसी दिन पश्चिम को जाना अमंगल कारी है, किसी दिन उत्तर में और किसी दिन दक्षिण में जाना मुसीबत पैदा कर देता है। इन दिनों उन दिशाओं में जाना दिशा शूल होता है।

सूरज नें पंडित जी से पूछा-पंडित जी रेलगाडियां रोज किसी न किसी दिशा में चलती हैं। बताओ दिशाशूल की रोज़ गड़बड़ क्यों नहीं होती? बसें भी सड़कों पर हर दिशा में दौड़ती हैं। रोज कोई दुर्घटना नहीं होती क्यों?

दुघर्टनाएं कभी-कभी तो होती हैं। पंडित जी बोले। सूरज नें कहा - दुर्घटना का कोई कारण होता है। जैसे पटरी पर पहले कोई गाड़ी खड़ी है। पटरी बदलने वाले ने ग़लती की। आने वाली गाड़ी के लिए पटरी नहीं बदली। हो गई दुर्घटना। दिशा शूल का इससे कोई लेना-देना नहीं?

ताई ने भी सूरज की बात को ठीक बताया। और पंडित जी से पूछा -बताओ जी कि वह बेटी को विदा करें या नहीं?

पंडित जी ने कहा -ताई बुद्ध के दिन बहिन को भाई के घर से विदा नहीं होना चाहिए। वरना कुछ बुरा हो जाता है।

सूरज ने पंडित जी को याद दिलाया। पिछली साल मेरी बहन माया बुद्ध को विदा हुई थी। आपने तब भी मना किया था। मैंने आप की बात नहीं मानी। माँ ने भी मरो साथ दिया था।

ताई बोली -याद आया। तब सूरज की तबियत खराब थी। माया का पति बीमार था। उस का देवर माया को लेने आया था। हमने बुद्ध को ही माया को विदा कर दिया। दो दिन में ही दोनों ठीक हो गए। सूरज भी और दामाद भी।

पंडित जी बोले -मुझे भी याद आया। सूरज ने बड़ी बहस की थी। याद है सूरज।

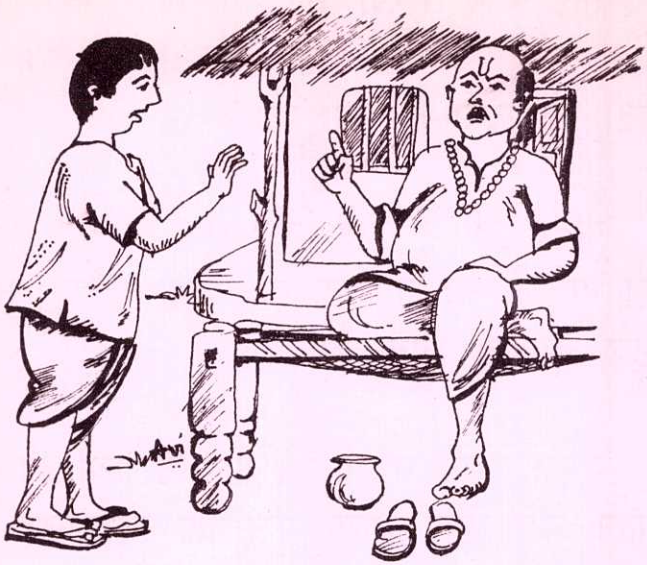

सूरज बोला-मैंने बहस नहीं की थी। मैंने कहा था।

हर दिन ईश्वर का बनाया हुआ है। हर दिन शुभ होता है। अच्छा होता है। हर दिन यात्रा की जा सकती है। कोई दिन दिशा शूल नहीं। कोई अपशकुन नहीं होता। बाला का ससुराल जाना जरूरी है। पंडित जी, धायो चाची को आज्ञा दे दो।

पंडित जी राजी नहीं हुए। ताई फौरन ताड़ गई और बोली -याद है पंडित जी आपके पिता जी ने शुभ दिन और शुभ घड़ी में स्नान की यात्रा शुरू की थी?

पंडित जी ने सिर हिलाया -गए तो थे।

सूरज पूछ बैठा-क्या हुआ था पंडित जी?

ताई ने सूरज को डपट दिया। इससे क्या पूछता है। मैं बताती हूँ -वे गंगा में डूब गए। दो दिन बाद लाश मिली। वहीं उनका क्रिया कर्म कर दिया। बड़े अच्छे थे पंडित जी के पिता जी। ताई की आंखें में आँसू आ गए। पंडित जी भी दुखी हो गए।

थोड़ी देर तक खामोशी रही। पंडित जी विचारों में खो गए। पंडित जी ने चुप्पी तोडी। ताई, लगता है सूरज ठीक ही कहता है। ईश्वर के बनाए सब दिन शुभ हैं। धायो - बाला को विदा कर दे। उसे कोई कष्ट नहीं होगा।

एक दिन पंडित प्रभुदयाल की बहू - शोभा ताई के घर आई। ताई के पैरों पड़ी। ताई का आशीष लिया। उनके पास बैठ गई उसने हंसना शुरू किया। हंसी रूके ही नहीं। ताई को उस पर गुस्सा आ गया। ताई ने उसे डाट लगाई। और बोली-औरत के लिए यह शर्म की बात है। ऐसे नहीं हंसते धरमु से तेरी शिकायत करूँगी। इतनी हंसी अच्छी नहीं होती। बता क्या बात है?

शोभा ताई की डाट से डर गई। फिर वह संभली और बोली। तीन दिन से सूरज देवर चौपाल पर जमे बैठे हैं। एक काली बिल्ली पाल रखी है। रामदीन को खाली घड़ा दे रखा है। बुद्धा तेली को तेल का कुप्पा।

इनसे वो वहां क्या कर रहा है? ताई ने पूछा। शोभा ने बताया हमारे ससुर जी शहर जाने को घर से निकलते हैं तो कोई न कोई अपशकुन करा देते हैं सूरज देवर। ससुर जी परसों घर से निकले तो काली बिल्ली को रास्ते के पार कर दिया। हो गया अपशकुन। वे घर लौट आए। बिना बात सासू जी से लड़ पड़े। सासू ने भी सौ सुनाई। "बिल्ली का गुस्सा मुझ पर उतारते हो।" बस ससुर जी तो दिन भर सूरज को ही कोसते रहे।

कल ससुर जी ने देर तक पूजा-पाठ किया। घर से बाहर कदम निकाले। गली में थोड़ी दूर चले। सामने से रामदीन खाली घड़ा लेकर आ गया। यह भी अपशकुन हो गय। क्या करें, लौट आए घर। पैर पटक कर खाट पर गिर पड़े। छड़ी को फेंका तो वह सासू जी के जा लगी। फिर दोनों में देर तक कहा-सुनी होती रही। थोड़ी

देर में प्यार से बातें होने लगी। "अपशकुन हो गया तो कोई बात नहीं, कल चले जाना सासू जी ने कहा।" पंडित जी ने कहा। ठीक है और सो गए।

आज हाथ मुंह धोकर तैयार हुए। कई बार परमात्मा का नाम लेकर प्रार्थना की। अर्चना के बाद चौपाल तक पहुंचे के बुद्धा तेली सामने आ गया। बोला-पंडित जी पा-लागन। बस पंडित जी ने तेली को आशीष नहीं दिया। वे दौड़कर घर आए। आते ही वे कुछ बड़बड़ाए। सासू जी ने पूछा -अब आज क्या हुआ?

पंडित जी ने दुखी मन से कहा - अपशकुन हो रहे हैं। इस बार भी हमारे गन्नों पर इनाम नहीं मिलेगा। तेरी बहू ने जो बढ़िया कालीन बनाई है वह भी मारी गई। बड़ी मेहनत की थी बेचारी ने। ताई! ससुर जी ने कविता पढ़ी-

इकला हिरना, दूजा सियार,
भैंस पर बैठा मिल जाए ग्वार।
तीन कोस तक मिले जो तेली,
समझो मौत शीश पर खेली।

आज तेली मिल गया। शहर जाता तो लौटकर नहीं आता। सब सूरज की बदमाशी है। कहता है शकुन-अपशकुन कुछ नहीं होता।

सूरज को बुरा-भला कहा। बस तान कर सो गए। शहर में नुमाइश लगी है। वहाँ हमारे गन्ने कृषि-प्रदर्शनी में रखे गए हैं। मैंने भी एक बढ़िया कालीन बनाया। वह भी प्रदर्शनी में रखा गया है। परसों इनाम का फ़ैसला हुआ होगा। लेकिन ससुर जी वहां नहीं जा सके। सूरज देवर जी ने कल भी अपशकुन का मोर्चा जमाया। आज तुम्हारा बेटा शहर गया। उसके सामने तो तीनों अपशकुन एक साथ हुए। मगर वह नही रूका

वह शकुन-अपशकुन नहीं मानते। अभी लौटे हैं। आज बड़े गम्भीर हैं। आपको घर बुलाया है। प्रधान जी और सूरज देवर को बुलाने आपका बेटा खुद गया है।

प्रदर्शनी का नतीजा क्या रहा? उन्होंने आकर कहा -ताई जी प्रधान जी, सूरज के सामने ही बताएंगे। ससुर जी क्रोध से लाल हो गए और बोले, सूरज को बुलाओ उसने जानबूझकर अपशकुन किए थे। आज खूब सुनाऊँगा। वह सूरज बड़ा शैतान है। इसकी मां को भी बुलवालो। आज फैसला हो जाए। देवर सूरज आ गए होंगे। चलो बहुत देर हो गई। झगड़े बढ़ सकते हैं। सूरज की शरारत तो आप जानो। जल्दी चलो। कोई ऊंच नीच ना हो जाए।

चलो बेटी आज सूरज की चाँद पर एक बाल नहीं बचेगा। गुस्से में ताई ने कहा। शकुन-अपशकुन का उसने ठेका ले रखा है।

दोनों घर आई तो देखा। हंसी ठट्ठा हो रहा है। पंडित जी कह रहे थे सूरज की बात सच है। शकुन-अपशकुन कुछ नहीं होता। यह भी ढ़ोंग है, अंधविश्वास है।

ताई मुकन्दी ने पूछा - क्या हुआ नुमाइश में?

पंडित जी के बेटे धरमू ने बताया ताई। गन्नों को जिले का पहला इनाम मिला। कालीन पर भी पहला इनाम मिला। कालीन को तो दिल्ली की नुमाइश में भी भेजा जाएगा। लो लड्डूओं का थाल और सब का मुंह मीठा कराओ।

ताई बोली मैं क्यों प्रधान जी हैं। पंडित जी हैं। इनसे बटवाओ।

गन्नों का इनाम मिला है सूरज के कारण। धरमू बोला।

वह कैसे? ताई बोली।

इसलिए कि सूरज के कहे मुताबिक खाद, पानी और दवा का प्रयोग किया। सूरज बताओ।

और कालीन? ताई पूछ बैठी।

वो तुम्हारे घर पर माया से सीखा था कालीन बुनना। माया तो इस की गुरू है।

अच्छा-अच्छा-ला लड्डू। ताई ने लड्डू लिए और सब का मुंह मीठा कराया।

सूरज बोला-इस शकुन को तो मैं भी मानता हूँ मुंह मीठा करने का शकुन अच्छा रहा। बाकी अपशकुन सब मारे गए।

पंडित जी ने कहा- चल शैतान कही का।

पर अब तक शैतान ने पंडित जी की आंखें खोल दी थीं।

सब दिन परमेश्वर के बनाए हैं कोई बुरा कोई भला नहीं होता। सब परमेश्वर के जीव हैं किसी के दर्शन अपशकुन नहीं होते।

यही ज्ञान का रास्ता है। विज्ञान का तरीका है। सूरज की सीख है।